दिनांक : 27-08-2020

कॉलेज का नाम : मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम : डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक : द्वितीय खंड (कला)

विषय : प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई : सात

पत्र : चतुर्थ

अध्याय : गणतंत्र का छायाभास

गणतंत्र का पुनरुत्थान :- युवान शी काई के देहांत के बाद प्रांतीय सिपहसालार अपनी स्वतंत्रता और विशेषाधिकार की माँग करने लगे। युवान शी-काई का उत्तराधिकार प्रधानमंत्री तुवान-ची-जुई बना। प्रांतीय सिपहसालारों ने उसे स्पष्ट कह दिया कि वे उसके प्रति तभी तक वफादार रहेंगे जब तक

वह उनके हितों की रक्षा करता है। पीकिंग ने संसद तक का पुनर्स्थापन हुआ जिसने युवान को युवान का उत्तराधिकारी मान लिया। उपराष्ट्रपति ली युवान-हुंग राष्ट्रपति बना। उसने 1911 ई० की क्रांति में महत्वपूर्ण भाग लिया था। उसने नानकिंग संविधान के इस विचार को माना लिया कि संसद सर्वोच्च है किंतु यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि संविधान ने राष्ट्रपति के अपेक्षा मंत्रिमंडल को अधिक कर दिए थे। प्रधानमंत्री युवान शी-काई की तरह चीन का शक्तिशाली व्यक्ति बनना चाहता था।

फलतः संसद से उसका संघर्ष शुरू हो गया।

संघर्ष के कारण दो थे जो युवान शी-काई के समय थे। वित्तीय समस्या के समाधान पर मतभेद था। ऋण लेकर या राजस्व का पुनर्गठन करके वित्तीय समस्या के समाधान पर मतभेद किया जा सकता था।

युवान शी-काई की तरह युवान ने भी संसद से बिना परामर्श लिए वित्त की व्यवस्था की और संसद को इसका अनुमोदन करने के लिए कहा। इस पर संघर्ष शुरू हो गया। एक दूसरा कारण पदों पर नियुक्ति थी। संसद मंत्रिमंडल के सदस्यों को तंग करने लगी। अंड़गा नीति शुरू हो गई। संसद में किसी भी विषय पर बड़ा वाद-विवाद होने लगा। वहां अव्यवस्था फैल गई तथा सदस्य एक दूसरे पर कोयड़ तो उछालते थे, मार पीट भी करने लगे।

संसद के सामने संविधान निर्माण का काम पुरा करने की भी समस्या थी। यह काम संविधान निर्मात्री सभा ने शुरू कर दिया था। किंतु धीमी गति से काम हो रहा था। संसद की सर्वोच्च बनाने के प्रश्न पर बड़ा मतभेद था। यह काम अभी

घ्रश भी नही हुआ था कि संसद को पीकिंग से हटा दिया गया! इससे संसदीय संविधानवाद का अंत हो गया! यद्यपि संसद का भूत दौड़ता रहा लेकिन इस काल मे प्रांतीय फौजी वर्चस्व बना रहा! 1923 ई० मे संविधान निर्माण का काम पुरा हुआ और उसी वर्ष इसे लागू किया गया। किंतु इससे संसदीय सस्कार पुनस्थापित नही हुई! प्रथम विश्व युद्ध मे चीन के सहभागिता प्रश्न पर संसद मे बड़ा हंगामा शुरू हुआ। पीकिंग ने प्रांतीय सिपहसालार भी इकट्ठे हो गए! इसी समय से पीकिंग की राजनीति मे उत्तरी सैनिक दल का प्रभाव बढ़ गया तथा प्रांतीय सिपहसालारो का वर्चस्व बढ़ गया!

तुवान ने संसद मे अपना युद्ध विधेयक पारित कराना चाहा! संसद ने इसका विरोध किया

Scanned with CamScanner

तथा इसकी मांग पर राष्ट्रपति ने उसे बर्खास्त कर दिया। किंतु उसने पद त्यागने से इन्कार कर दिया। प्रांतीय सिपहसालारों ने उसका समर्थन किया तथा संसद को भंग करने की मांग की। राष्ट्रपति ने संसद को भंग नहीं किया। इस पर प्रांतीय सिपहसालारों ने पीकिंग पर हमला बोल दिया। कुछ समय के लिए राजनीतिक गतिरोध बना रहा। राष्ट्रपति ली प्रांतीय सिपहसालारों की माँग मानने के लिए तैयार न था। उसने प्रांतीय सैनिक गुट के नेता चांग सून को मध्यस्थता करने के लिए पीकिंग बुलवाया। वह उसके सहयोगी सिपहसालारों की माँग पर डटा रहा।

इतना ही नहीं 1 जुलाई 1917 ई० में उसने मंचू वंश के पुनर्स्थापन के लिए भी प्रयास किया। किंतु सैनिक गवर्नर राजतंत्र एवं संसदीय गणतंत्रवाद

के पुनर्स्थापन के पक्ष में न थे।

सैनिक प्रभुत्व :- युवान शी-काई के देहावसान के बाद चीन में बड़ी अव्यवस्था - अराजकता मच गई। संसद और प्रधानमंत्री के बीच सत्ता के लिए संघर्ष शुरू हो गया। ऐसी स्थिति में प्रांतीय सिपहसालारों का वर्चस्व बढ़ गया। वे केंद्रीय सरकार की अवहेलना भी करने लगे तथा वहाँ कब्जा जमाने का प्रयास करने लगे। इसके दो कारण थे। प्रथम पीकिंग पर नियंत्रण रखने का अर्थ पूरे चीन में नियंत्रण रखना था। द्वितीय, विदेशी शक्तियाँ भी पीकिंग को चीन की राजधानी समझती थीं। तथा वैदेशिक मामले यही तय महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए पीकिंग पर नजर गड़ाए रखते थे।

तीसरी प्रांतीय सिपहसालारों के दो गुट थे। युवान के देहांत के बाद एक गुट 1916 ई० में टुकवांग

के उपशासक फेंग कुवो-चांग का समर्थक था। वह ली युवान हंग के राष्ट्रपति बन जाने के कारण बाद में उपराष्ट्रपति बन गया था। एक दूसरा गुट तुवान ची-जुई का समर्थक था। 1916 से 1918 ई० तक इन दोनों गुटों में सत्ता के लिए संघर्ष जारी था। वस्तुतः यह संघर्ष राष्ट्रपति ली युवान हंग और प्रधानमंत्री तुवान ची-जुई के बीच था। इसमें तुवान गुट विजयी रहा। अक्टूबर 1918 ई० में सु शीह-चांग को राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया।

निर्वाचन में अपनी विजय निश्चित करने के लिए तुवान गुट ने एक अंफू क्लब की स्थापना की जिसका उद्देश्य नव निर्वाचित संसद के बीच सु शीह-चांग को राष्ट्रपति बनाने का प्रचार करना था। अपनी उद्देश्य पूर्ति में यह सफल रहा।

Scanned with CamScanner